Leadership, Education, Personality: An Interdisciplinary Journal ISSN: 2524-6178
www.sibe.rpress.co.in, Vol. 19, Issue 01 January 2024, UGC CARE 1,IF: 7.621

स्वामी विवेकानन्द के मानव निर्माण सम्बन्धी शैक्षिक विचारों का राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में समावेशनः एक विश्लेषणातमक अध्ययन

सोनिया शर्मा*, प्रोफेसर (डा०) संजीव कुमार**

सार संक्षेप

भारत की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लागू होने के बाद से ही भारतीय शिक्षा में प्रत्येक स्तर पर भारतीय ज्ञान परंपरा तथा भारतीय सांस्कृतिक एवं मानव मूल्यों के आत्मसातीकरण हेतु पाठयक्रमों, शिक्षण–अधिगम पद्धतियों, शैक्षणिक वातावरण, आदि में परिवर्तन पर जोर दिया जा रहा है। जहाँ एक ओर नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में नवाचार, शोध गुणवत्ता, आत्मनिर्भरता, बालक के सर्वांगीण विकास व सृजनशीलता जैसे प्रत्ययों का समावेश है वहीं दूसरी ओर प्रचीन भारतीय वैज्ञानिकों मनीषियों तथा शिक्षाविदों के ज्ञान एवं विचारों को भी पर्याप्त महत्व दिया गया है। आधुनिक नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के इस प्रारूप को जानकर शोधार्थी ने "नई शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में महर्षि अरविन्द घोष की समन्वित शिक्षा एवं स्वामी विवेकानन्द की मानव निर्माण शिक्षा सम्बन्धी शैक्षिक चिन्तन का समीक्षात्मक अध्ययन" शीर्षक के अन्तगर्गत शोध कार्य किया। शिक्षा जगत में आधुनिक भारत के निर्माण एवं भारतीय युवाओं में नई ऊर्जा एवं उत्साह के संवर्द्धन के लिए स्वामी विवेकानन्द को ही प्रेरणास्रोत माना है। उनके मानव निर्माण सम्बंधी शैक्षिक विचारों ने भारत की शिक्षा एवं राजनीति व प्रशासनिक व्यवस्था में क्रान्तिकारी परिवर्तन के आधार दिये। प्रस्तुत शोध पत्र में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्वामी विवेकानंद के इन्हीं विचारों से सम्बंधित समावेशन का विश्लेषणात्मक चित्रण करने का प्रयास किया गया है जोकि शोधार्थी द्वारा किये गये शोध के उद्देश्यों एवं परिणामों पर आधारित है। अस्तु शोध के परिणमों की प्राप्ति है कि स्वामी विवेकानंद के मानव निर्माण सम्बंधी विचारों का नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में न केवल समावेश है अपितु स्वामी विवेकानंद के मानव निमाण सम्बंधी विचारों को ही समूची राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के निर्माण का आधार स्तम्भ बनाया जाना प्रतीत होता है।

मुख्य शब्दः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानव निर्माण सम्बंधी विचार, भारतीय ज्ञान परंपरा, नवाचार, सृजनशीलता।

1. प्रस्तावनाः

स्वामी विवेकानंद एक क्रांतिकारी विचारक और लीक से हटकर काम करने वाले ओजस्वी शिक्षाविद् थे, जिन्होंने अपने समय की शिक्षा प्रणाली का विरोध करने का साहस किया और इसे एक ऐसे छात्र–केंद्रित सामंजस्यपूर्ण मॉडल के साथ बदलने का प्रस्ताव दिया, जो सभी के लिए न्यायपूर्ण और समतापूर्ण हो। उन्होंने शिक्षा की एक ऐसी योजना का सपना देखा था जो हर स्तर पर शिक्षार्थियों की जरूरतों को पूरा करे– चाहे वह बौद्धिक हो, नैतिक हो या आध्यात्मिक। उन्होंने जो कार्यक्रम प्रस्तुत किया, वह हमारे कालातीत शास्त्रों से निकाले गए सदियों पुराने पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान का एक संयोजन था, जो भारत को दुनिया की विकसित शक्तियों के साथ एक आधुनिक राष्ट्र बनने की ओर ले जा सकता था। उनकी शिक्षा की योजना व्यापक और पूर्ण है क्योंकि इसका उद्देश्य युवा शिक्षार्थियों में वे सभी आवश्यक गुण विकसित करना है, जो उन्हें अपने जीवन को उत्साह के साथ जीने में मदद करें और राष्ट्र के लिए एक संपत्ति बनें। उनका अभूतपूर्व शैक्षिक दर्शन राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 द्वारा निर्धारित दिशा–निर्देशों में प्रतिध्वनित होता है।

2. सम्बन्धित साहित्य का अध्ययनः

पन्नीरसेल्वम और राजा (2019) ने अपने लेख में मानवतावाद पर चर्चा की, जैसा कि स्वामी विवेकानंद के भाषणों में परिलक्षित हुआ है। लेख का निष्कर्ष रहा कि विवेकानंद एक संदेशवाहक हैं जिन्होंने भारत की सांस्कृतिक विरासत का विश्व में मानव निर्माण हेतु प्रचार किया है। दीक्षित (2020) अपने शोध अध्ययन में बताते हैं कि विवेकानंद की विचारधारा के राजनीतिक और सामाजिक आयाम के साथ–साथ भारत के आध्यात्मिक उत्थान के लिए विवेकानंद के ज्वलंत उत्साह और दारिनारायण के प्रति उनके जुनून की भावना भी है। पुथियाथ (2020) के शोध परिणाम में मुख्य था कि स्वामी विवेकानंद का विचार था कि

बालक द्वारा आत्म–शिक्षा के माध्यम से सीखा और चीजों को अपनी धारणा और विचार की शक्ति से स्पष्ट किया गया होना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और स्वामी विवेकानन्द की विचार सरिणि में समानताएं परिलक्षित होती हैं। ग्रोवर किरन (2022) मनुष्य का शारीरिक, मानसिक, धार्मिक, नैतिक, सामाजिक, बौद्धिक, सौंदर्यात्मक, आर्थिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक ,चारित्रिक ,भावात्मक विकास, आध्यात्मिक आनंद , स्वतंत्र विचार शक्ति, निर्णय लेने की शक्ति, समतामूलक और समावेशी समाज, वैश्विक नागरिक के सम्बन्ध में दोनों मान्यताएं समभाव का प्रचार व प्रसार करती हैं।

3. शोध के उद्देश्यः

प्रस्तुत शोध पत्र की सीमितता को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी ने शोध कार्य से मात्र निम्नलिखित दो उद्देश्यों का ही उल्लेख किया है–

1. स्वामी विवेकानन्द की मानव निर्माण शिक्षा की रूपरेखा का अध्ययन करना।
2. नई शिक्षा नीति में वर्णित शिक्षा के विभिन्न अंगों के संदर्भ में स्वामी विवेकानन्द की मानव निर्माण शिक्षा एवं महर्षि अरविन्द घोष की समन्वित शिक्षा की प्रासंगिकता का समीक्षात्मक अध्ययन करना।

4. शोध विधिः चयनित शोध काय हेतु शोधार्थी ने शोध की प्रकृति के अनुसार दार्शनिक एवं विश्लेषणात्मक शोध विधि का चयन किया है। जिसमें नई शिक्षा नीति एवं स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक दर्शन से सम्बंधित मूल व द्वितीयक स्रोतों का अध्ययन किया है।

5. स्वामी विवेकानंद के मानव निर्माण सम्बंधी विचारों का एन. ई.पी. 2002 के सन्दर्भ में विश्लेषणः

स्वामी जी की शिक्षा की दृष्टि और एन.ई.पी. 2020 के बीच कई समानताएँ हैं। स्वामी जी ने युवा शिक्षार्थियों को शिक्षा प्रदान करते समय मातृभाषा के महत्व पर जोर दिया और व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए अंग्रेजी और संस्कृत सीखने का निर्देश दिया। जहाँ पश्चिमी विज्ञान और प्रौद्योगिकी में महारत हासिल करने के लिए अंग्रेजी आवश्यक है, वहीं संस्कृत हमारे शास्त्रीय ग्रंथों के विशाल भंडार की गहराई को समझने में सहायक है। इसका तात्पर्य यह था कि यदि भाषा को कुछ चुनिंदा विशेषाधिकार प्राप्त लोगों तक सीमित नहीं रखा जाता है, तो सामाजिक एकता एक वास्तविकता बन जाएगी। इसी भावना को ध्यान में रखते हुए, एन.ई.पी. प्राथमिक स्तर पर छात्रों के लिए मातृभाषा में शिक्षा अनिवार्य बनाने का प्रयास करता है। इसके अलावा, उन्हें आधिकारिक भाषाओं की सूची में उल्लिखित किसी भी अन्य भाषा का अध्ययन करना आवश्यक होगा। स्वामी जी द्वारा विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर जोर देने का उल्लेख एन.ई.पी. में NRF, NETF, स्कूल पाठ्यक्रम की स्थापना जैसे प्रमुख पहलों के साथ किया गया है, जिसमें मशीन लैंगुएज व आर्टिफीशियल इण्टेलीजेंस आदि को शामिल किया गया है। अवसर चाहने वालों के बजाय अवसर प्रदाता बनने वाले व्यक्तियों को विकसित करने का उनका दृष्टिकोण स्कूल स्तर से ही व्यावसायिक शिक्षा पर एन.ई.पी. के जोर में प्रतिध्वनित होता है। यह आत्मनिर्भर भारत के लिए एक निश्चित फार्मूला होना चाहिए।

एनईपी 2020 प्रत्येक छात्र की विशिष्टता को समृद्ध और सशक्त बनाने का वादा करता है क्योंकि शिक्षा का अर्थ किसी की क्षमता को सीमित करना नहीं है, बल्कि उसका विस्तार करना और उसे चरमोत्कर्ष पर ले जाना है जैसा कि स्वामीजी ने कहा था, ''सच्ची शिक्षा सत्य की अथक खोज और मानवीय स्थिति को बेहतर बनाने का निरंतर प्रयास है।''

एनईपी 2020 में भारत को विश्वगुरु के अपने पूर्व दर्जे पर वापस लाने का एक बड़ा लक्ष्य है, जिसमें भारत में अध्ययन, भारत में रहना और दुनिया के शीर्ष 100 संस्थानों के साथ गहन जुड़ाव जैसी पहल शामिल हैं। जैसा कि स्वामीजी ने राष्ट्रीय परिवर्तन और चरित्र परिवर्तन के बीच घनिष्ठ संबंध पर टिप्पणी की थी, एनईपी 2020 एक व्यक्ति के चरित्र का निर्माण करने, उसकी बौद्धिक क्षमता के माध्यम से उसे राष्ट्र और दुनिया में योगदान करते हुए अपने पैरों पर खड़ा करने की इच्छा से निर्देशित है। स्वामीजी की शैक्षिक दृष्टि महत्वाकांक्षी और बहुत ही आकांक्षापूर्ण एनईपी 2020 के माध्यम से क्षमता निर्माण, चरित्र निर्माण और राष्ट्र निर्माण की दिशा में आगे और स्थिर मार्च के माध्यम से साकार होगी।

स्वामी जी कहा करते थे, ''हमें मरते दम तक सीखते रहना चाहिए और अनुभवी दुनिया ही सबसे अच्छी शिक्षक है।'' उनके आदर्श भारत के वसुधैव कुटुम्बकम के दृष्टिकोण से मेल खाते हैं। एन.ई.पी. 2020 के

चार्टर में ''शिक्षा प्रणाली को समग्र, लचीला, बहु–विषयक और 21 वीं सदी की जरूरतों और 2030 के सतत विकास लक्ष्यों के अनुरूप बनाने'' की परिकल्पना की गई है। एक समय था जब दुनिया भर के छात्र विज्ञान और कला का ज्ञान प्राप्त करने के लिए नालंदा और तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों में आते थे। एन.ई.पी. खोए हुए गौरव को पुनः स्थापित करने और भारत को एक बार फिर ज्ञान, उत्कृष्टता और नवाचार का केंद्र बनाने का एक प्रयास है। पहुंच, समानता, गुणवत्ता, सामर्थ्य और जवाबदेही के सिद्धांतों के अनुरूप, यह देश के शैक्षिक पारिस्थितिकी तंत्र को एक जीवंत ज्ञान समाज में बदलने की आकांक्षा रखता है।

स्वामीजी ने कहा, ''यह मत सोचो कि तुम कमजोर या छोटे हो, तुम कुछ भी और सब कुछ कर सकते हो।'' उनके दृष्टिकोण में एक महत्वपूर्ण घटक आत्मविश्वास और आत्मसम्मान को पोषित करने पर जोर था क्योंकि उनके अनुसार ''शिक्षा केवल दिमाग को बहुत सारे तथ्यों से भरना नहीं है'' , यह एक सार्थक और उद्देश्यपूर्ण अभ्यास होना चाहिए। एन.ई.पी. 2020 का उद्देश्य छात्रों को नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों, चरित्र, ज्ञान, कौशल, रचनात्मक प्रतिभा, नवाचार और नेतृत्व कौशल से परिपूर्ण पूर्ण मनुष्य के रूप में ढालना है जो अनुकरणीय खिलाड़ी भावना और टीम वर्क का दावा कर सके। स्वामीजी हमेशा मानसिक और शारीरिक शक्ति दोनों के विकास के लिए निहित हैं। उन्होंने कहा कि व्यक्ति के पास ''लोहे की मांसपेशियाँ और स्टील की नसें'' होनी चाहिए। सरकार का फिट इंडिया अभियान और एन.ई.पी. 2020 उनके दर्शन से प्रेरित और निर्देशित हैं।

स्वामीजी ने कहा, ''एक राष्ट्र की प्रगति लोगों में फैली शिक्षा और बुद्धिमत्ता के अनुपात में होती है।'' उन्होंने पाया कि शिक्षा सभी सामाजिक और वैश्विक बुराइयों के लिए रामबाण है। उन्होंने व्यक्तियों को उनके आध्यात्मिक स्व के प्रति जागृत करने की सख्त आवश्यकता को रेखांकित किया क्योंकि शिक्षा का मूल उद्देश्य यही है। स्वामीजी के अनुसार, सभी शिक्षा का उद्देश्य मानव–निर्माण है। उन्होंने वेदांत के अपने व्यापक दर्शन के दायरे में मानव–निर्माण शिक्षा का प्रस्ताव रखा, जो एन.ई.पी. 2020 की पहली पंक्ति में प्रतिध्वनित होता है, इस प्रकार, ''शिक्षा पूर्ण मानव क्षमता प्राप्त करने के लिए मौलिक है।'' स्वामीजी के लिए शिक्षा ''वह जानकारी नहीं है जो आपके मस्तिष्क में डाल दी जाती है और जीवन भर बिना पचाए वहाँ घूमती रहती है। हमारे पास जीवन–निर्माण, मानव–निर्माण, चरित्र–निर्माण विचारों का आत्मसात होना चाहिए।'' एन.ई.पी. 2020 संचार, सहयोग, टीम वर्क, लचीलापन, नेतृत्व आदि जैसे जीवन कौशल के साथ–साथ प्रत्येक व्यक्ति की रचनात्मक क्षमता के विकास पर जोर देता है जो एक संपूर्ण व्यक्तित्व के निर्माण के लिए अनिवार्य हैं। यह इस सिद्धांत पर निर्भर है कि शिक्षा से न केवल संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास होगा, बल्कि युवाओं की सामाजिक, नैतिक और भावनात्मक क्षमताओं को भी सशक्त बनाया जाएगा। नई नीति को 2021–22 से शुरू करके इस दशक में धीरे–धीरे लागू किया जाना है। प्रत्येक छात्र, शिक्षक, अभिभावक और अन्य हितधारकों की भूमिका सर्वोपरि है। सभी हितधारकों की सक्रिय भागीदारी के बिना, नई नीति का प्रभावी कार्यान्वयन एक दूर का सपना होगा।

शिक्षा मंत्रालय एनईपी 2020 के कार्यान्वयन के संबंध में स्वामीजी के शब्दों – ''उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए'' का पालन करने की प्रतिज्ञा करता है और मैं, एक कट्टर आशावादी के रूप में, एक उज्जवल भविष्य की आशा करता हूं।

परिणामः

1. उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर शोध का परिणाम यह रहा कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में जो नवाचार, सृजनशीलता, आत्मनिर्भरता एव मूल्यों के प्रत्यय का समावेश है वह पूर्णतः स्वामी विवेकानंद के मानव निर्माण सम्बंधी शैक्षिक विचारों पर आधारित है जोकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की आत्मा के रूप में परिलक्षित होते हैं।
2. स्वामी विवेकानंद के मानव निर्माण सम्बंधी विचार एवं शैक्षिक दर्शन आधुनिक भारत को शिक्षा के माध्यम से विकसित एवं आत्मनिर्भर बनाने के लक्ष्यों को प्राप्त करने में प्रासांगिक हैं।

सन्दर्भः

1. अवस्थी अमरेश्वर. आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन, रिसर्च पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1997, पृ.422.
2. ग्रोवर किरन. नई शिक्षा नीति 2020 के सृजन से विवेकानन्द के शिक्षा दर्शन की पुर्नस्थानपा. "व्यक्तित्व संवर्द्धन और शैक्षिक नीति". हंस प्रकाशन नई दिल्ली 2022. Retrived from https://www.researchgate.net/publication/358021631_'na'i_siksa_niti_2020'_ke_srjana_se_vivekananda_ke_'siksa_darsana'_ki_punasrthapana
3. गुप्त, लक्ष्मी नारायण. महान, पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षाशास्त्री, कैलाश प्रकाशन, इलाहाबाद, 1992.
4. गुप्ता, एस.पी.. भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एव समस्यायें, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 1998.
5. जोशी, शान्ति. समसामयिक भारतीय, दार्शनिक लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1975.
6. Ahmed, M. & Godiyal, S. (2021). Study of Educational and Philosophical Thought of Aurobindo Ghosh and Its Relevance in Present Education Scenario, Asian Basic and Applied Research Journal.03(4):3034.
7. Chanda Rani (2017) A Study of Educational Vision of Aurobindo Ghosh; The International Journal of Indian Psychology ISSN 2348-5396(e), ISSN: 2349- 3429 (p) Volume 5, Issue 1, DIP: 18.01.125/20170501 DOI: 10.25215/0501.125
8. Concept Note: Viksit Bharat @ 2047; Concept Note for Discussion with Universities on Vision for 2047, https://innovateindia.mygov.in/viksitbharat2047/ Accessed on 15-03-2024, Friday.
9. Das, P. K. (2020). Educational philosophy and contribution of Sri Aurobindo to the field of education. International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT). 8(7), 1697-1701.
10. Debashri Banerjee (2016) National Education Theory of Sri Aurobindo; International Journal of Research in Humanities and Social Studies; Volume 3, Issue 1, January 2016, PP 34-40 ISSN 2394-6288 (Print1) & ISSN 2394-6296 (Online)